(5)

भाषा और लिपि

भाषा का सम्बन्ध जीवन से है तो लिपि का सम्बन्ध सभ्यता के विकास से, बिना लिपि के भी मनुष्य का काम चल सकता है, किन्तु भाषा के बिना नहीं चाहे वह किसी भी रूप में क्यों न हो। आज भी संसार में बहुत मनुष्य ऐसे हैं, जो लिखना नहीं जानते, किन्तु भाषा का प्रयोग करते हैं, किन्तु यह भी सच है कि लिपि ने भाषा को देश काल के बन्धन से मुक्त कर दिया है और भाषा को स्थायी बना दिया है, लिपियों ने भाषा के संरक्षण का भी काम किया है।

मनुष्य के हृदय में जितने भाव ~~अभिव्यक्त~~ हैं, उनको अभिव्यक्ति न तो भाषा पूर्ण रूप से कर सकती है और न ही लिपि। (1) उच्चरित भाषा की सीमाएं हैं तो लिखित भाषा की भी, सीमाएं कुछ ज्यादा ही हैं। लिखित भाषा उच्चरित भाषा का स्थूल सांकेतिक रूप है। स्थूल इसलिए कि भाषा के उच्चरित रूप में बल, तान, स्वर आदि के द्वारा अर्थ-सम्बन्धी जो विशेषताएं होती हैं, वे लिखित भाषा में पूर्ण रूप से नहीं आ सकती।

(2) ध्वनि और विचार का, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध रूढ़ है उसी प्रकार ध्वनि और उसके लिखित संकेत (वर्ण) का सम्बन्ध भी रूढ़ और

पारम्परिक ही है। उदाहरणार्थ हम एक कंठ्य ध्वनि को क के रूप में अंकित करते हैं तो रोमन लिपि का प्रयोग करने वाले K के रूप में। ध्वनि: प्राय: एक ही है, लेकिन उसकी लिपि में अन्तर आ गया।

जहाँ तक लिपि के विकास के प्रश्न है, वह भाषा की उत्पत्ति की तरह ही अनुमान आधारित है, किन्तु इतना तो सत्य है कि लिपि की उत्पत्ति का इतिहास भाषा की उत्पत्ति के बाद शुरू होता है। लिपि की विकास यात्रा है —

चित्रलिपि
↓
भाव लिपि
↓
ध्वनि लिपि

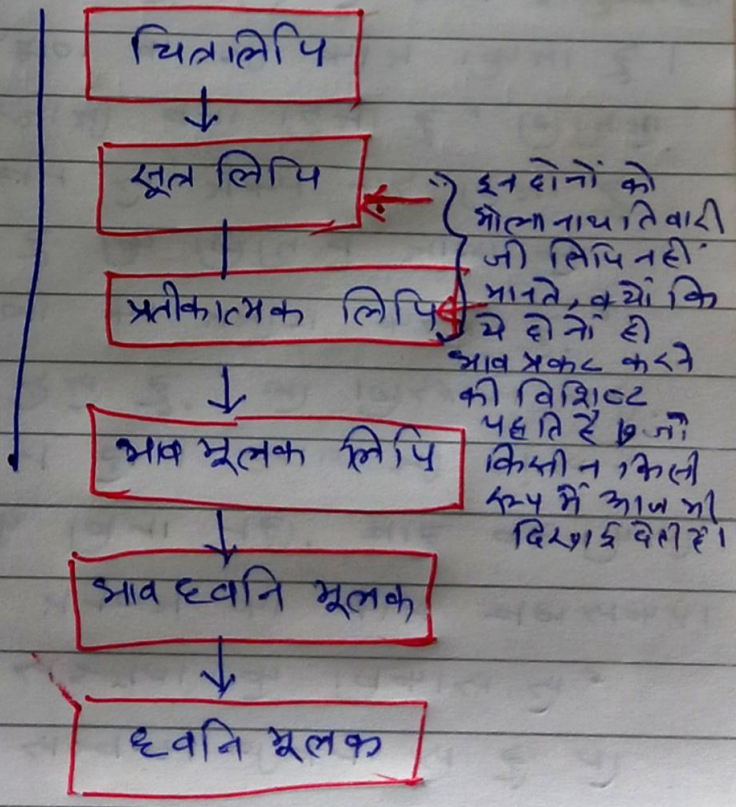

ध्वनि लिपि → इसमें अधिक तत्व ध्वनि विशेष का प्रतिनिधित्व करता है। —

<u>अक्षरात्मक</u> → चिन्ह किसी अक्षर को व्यक्त करता है, वर्ण को नहीं। नागरी लिपि अक्षरात्मक है। उदाहरणार्थ 'क' चिन्ह में 'क्' और 'अ' दो वर्ण मिले हैं।

<u>वर्णात्मक</u> → इसमें चिन्ह पूरे किसी वर्ण का बोध कराता है न कि किसी अक्षर का। रोमन लिपि वर्णात्मक है, इसमें 'K' से 'क्', 'B' से 'ब्' वर्ण का बोध स्पष्ट हो जाता है।

भारत की प्राचीन लिपियाँ

- खरोष्ठी लिपि
- सिन्धु घाटी की लिपि
- ब्राह्मी लिपि

ब्राह्मी लिपि

उत्तरी शैली

गुप्त राजाओं के समय ← 1. गुप्त लिपि
2. कुटिल लिपि
3. नागरी लिपि
4. शारदा लिपि
5. बांग्ला लिपि

([illegible] कुटिल लिपि [illegible] गुप्त लिपि से [illegible] विकसित हुआ है)

(नन्दिनागरी (दक्षिण भारत) गुजराती, मराठी, बंगला इससे विकसित लिपि है)

(कश्मीर की लिपि मानी जाती है। आधुनिक काल की कश्मीरी गुरुमुखी एवं टाकरी आदि इसी से निकली हैं।)

(नागरी लिपि की पूर्वी शाखा से बंगला का अभ्युदय माना जाता है। आधुनिक कालीन बंगला, मैथिली उड़िया आदि लिपियाँ इसी से विकसित हैं।)

दक्षिणी शैली

1. पश्चिमी लिपि
2. मध्यवर्ती लिपि
3. तेलगु
4. कन्नड़
5. ग्रन्थ
6. तमिल
7. कलिङ्ग